रखा जाने पर भी चित्रांतर्गत प्रकाश के प्रभाव को देखते हुए मानना पड़ता है कि उनके चित्रों का केन्द्रीय विषय है प्रकाश, न कि चित्रित व्यक्ति या घरेलू दृश्य।

गृहान्तर्भागों के दृश्यों के चित्र बनाने वाले डच चित्रकारों में याकोबस ब्रेल व एड्रियन ब्रौवर भी थे जिनको गौण स्थान दिया गया है। एमान्युएल डेविट व गेरार्ड हौर्क्गेस्ट ने प्रोटेस्टेंट गिरजाघरों के अन्दरूनी विशाल दृश्यों के खिड़की-दरवाजों में से आने वाले एवं परावर्तित प्रकाश व छाया के क्रीड़न व यथार्थ परिप्रेक्ष्य के साथ एवं बीच-बीच में छोटी-छोटी उपासकों की आकृतियों को अंकित करके बहुत आकर्षक चित्र बनाये हैं।

अधिकतर डच कलाकार अपनी अभिरुचि के अनुसार किसी विशेष चित्र विषय को चुनकर उसी विषय पर ध्यान केन्द्रित करके चित्रण किया करते थे। प्रकृति चित्रकारों में भी कुछ कलाकार समुद्री व समुद्र किनारे के दृश्यों के विशेषज्ञ थे, तो कुछ कलाकार केवल देहाती इलाकों के दृश्य चित्र बनाते थे और कुछ कलाकारों ने सिर्फ शहरों के भवनों, चौराहों व स्मारकों के चित्र बनाये। उनमें ऐसे भी कलाकार थे जिन्होंने क्षितिज तक फैले हुए मैदान व बादलों से घिरे हुए आसमान के चित्र बनाये। **विल्लेम वान डे वेल्ड**, पिता व पुत्र दोनों सागर दृश्यों के चित्रकार थे। एर्ट वान डेर नेर के 'चाँदनी रातों के दृश्य' चित्र लोकप्रिय थे। ख्यातनाम चित्रकार **हर्क्युलिस सेगर्स** का—जिनको रेम्ब्रांट भी महान् प्रकृति चित्रकार मानते थे—काले बादलों से घिरे हुए आसमान के नीचे का पहाड़ी दृश्य चित्र प्रसिद्ध है। **यान वान गोयेन** (1596-1656) ने सौम्य व धूसर रंगों का प्रयोग करके नदी व नहर के किनारों व किनारों पर बनी हुई इमारतों व वहाँ के व्यस्त जनजीवन के दृश्यों को चित्रित किया; 'मोंफुर्ट का किला', 'डार्ड्रेक्ट का दृश्य' उनके प्रसिद्ध चित्रों में से हैं। बारीकियों से भी प्रकृति की भिन्न अवस्थाओं का वास्तविक चित्रण करने में वे अधिक रुचि रखते थे। **आल्बेर्ट काइप** (1620-91) एक प्रतिभा सम्पन्न प्रकृति चित्रकार थे व अपने चित्रों में वे जानवरों की आकृतियाँ बनाते थे। 'देहात में गायें', 'दो चितकबरे घोड़े' उनके प्रसिद्ध चित्र हैं। **राइस्डाल** के शिष्य **माइन्डेर्ट हाब्बेमा** (1638-1709) प्रसन्न व शान्तिपूर्ण वातावरण के अन्तर्गत बनाये गाँवों, पनचक्कियों व तालाबों के प्रकृति चित्रों के लिए ख्यातनाम हैं, 'मिडेलहार्निस का मार्ग', (चित्र 66) 'पनचक्की', 'ग्राम का प्रवेश द्वार' उनके प्रसिद्ध चित्रों में से हैं। शहरी दृश्यों के प्रति बहुत कम डच चित्रकार आकृष्ट हुए। वर्मेर को छोड़कर किसी प्रतिभा सम्पन्न डच चित्रकार ने शहरी दृश्यों के चित्र नहीं बनाये। डच प्रकृति चित्रकारों में सबसे श्रेष्ठ थे **याकोब वान राइस्डाल** (1628-1682)। उनकी रंग संगति संयत थी और अन्य डच प्रकृति चित्रकारों के समान उन्होंने दृश्य में मानवाकृतियों को महत्त्व नहीं दिया व उनके कई चित्र मानवविहीन हैं। वे स्वयं गैर मिलनसार, एकान्तप्रिय व निराशावादी व्यक्ति थे व उनके चित्रित दृश्य भी उनकी इस वृत्ति को प्रतिमित करते हैं। चित्रकला के इतिहास में प्रकृति चित्रण का जन्म हुए अधिक कालावधि नहीं हुई थी व कलाकारों के सम्मुख यह समस्या थी कि जमीन, घने जंगल, धूप, पानी और आसमान को एक साथ, उनके वास्तविक रूप में किस तरह चित्रित किया जाये क्योंकि उनसे होने वाले नेत्रपटलीय प्रकाश प्रभाव में आपस में काफी विरोध होता है। इस समस्या का संतोषजनक हल चित्रकारों ने व उनमें भी सबसे अधिक राइस्डाल ने किया। उन्होंने प्रशान्त घने जंगलों, प्रपातों, वेगवती

Scanned with CamScanner

जलधाराओं, बंजर टीलों, गरजते समुद्र, करुण ध्वंसावशेषों व नगरों के दृश्यों को चित्रित किया है। डच प्रकृति-चित्रकारों ने प्रत्यक्ष स्थान पर जाकर चित्रण नहीं किया यद्यपि सेगर्स व रेम्ब्रांट के कुछ आरम्भकालीन प्रकृति चित्रों के मूल स्थानों का पता लगाया गया है। 'हार्लेम का दृश्य', 'ज्यू कब्रिस्तान', 'धूप की लहर', 'दलदल' राइस्डाल के प्रसिद्ध चित्रों में से हैं। इनमें भी 'ज्यू कब्रिस्तान' विशेष प्रसिद्ध है। प्रकृति की विभिन्न अवस्थाओं को प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त करने पर राइस्डाल अत्यधिक ध्यान देते थे व इस चित्र में उन्होंने प्रकृति के रौद्र स्वरूप का सामर्थ्यशाली दर्शन कराया है। दृश्य निस्संदेह काल्पनिक प्रतीत होता है किन्तु इससे उसके प्रभाव में कोई कमी नहीं आती। बीहड़, परिव्यक्त, पहाड़ी इलाके पर आक्रमण करते हुए काले गर्जन-मेघ, विध्वस्त प्राचीन भग्नावशेष, कब्रिस्तान के बीच से गुजरता हुआ जल-प्रवाह, बादलों के बीच में कहीं फूट कर दृश्य पेड़ के शुष्क तने व कब्रों पर गिरी हुईं कुछ प्रकाश किरणें और क्षितिज पर अस्पष्ट इन्द्रधनुष सब मिलकर नितान्त उदासी का भाव पैदा करते हैं; मानो सब कुछ नश्वर है—वायु, जल आदि प्राकृतिक शक्तियाँ और समय की गति मानव, मानव निर्मित वस्तुओं, पेड़-पौधों सबको मिट्टी में मिला देती हैं। शायद अपने जीवन की नश्वरता का विचार मन में आने के कारण ही राइस्डाल ने कब्रिस्तान के एक पत्थर पर अपना नाम भी लिखा है। (चित्र 65)

कुछ डच चित्रकारों ने केवल वस्तु-चित्रण पर ही ध्यान केन्द्रित किया। इनमें से विल्लेम क्लाज हेडा व यान डाविज हेम विशेष प्रसिद्ध थे। हेडा ने मुख्यतः धातु के बर्तन, कांच के गिलास व फलों के वस्तु चित्र बनाये तो हेम ने फूलों के। उनके वस्तु-चित्रण का प्रमुख ध्येय था वस्तुओं के भिन्न प्रकार के सतहों पर होने वाले प्रकाश के प्रभाव का यथार्थ अंकन व वस्तुओं के आकारों का चित्र क्षेत्र में समुचित संयोजन। वस्तु चित्रकार आब्राहाम **वान बेयरेन व विल्लेम काफ** ने भी काफी ख्याति अर्जित की। काफ का लुव्र संग्रहालय में रखा वस्तु चित्र बहुत प्रसिद्ध है। बॅरोक काल के सर्वोत्कृष्ट डच चित्रों की जो विशेषताएँ थीं—प्रकाश के प्रभाव व हल्की-गहरी व सूक्ष्मतर छटाओं का सही अंकन, अवकाश की गहराई का सम्यक दर्शन व रंगों की असाधारण ताजगी—उन सबका परिपक्व समुच्चय हमको **यान वर्मेर** (1632-75) की कला में देखने को मिलता है। रेम्ब्रांट के समान, उनकी विश्व के महान चित्रकारों में गणना की जाती है यद्यपि उनके चित्रों की संख्या अधिक नहीं है। वर्मेर ने आरम्भ में 'मार्था और मेरी के घर में ईसा', 'डायना व परियाँ' जैसे धार्मिक एवं पौराणिक विषयों के चित्र तथा समकालीन पृष्ठभूमि को लेकर 'चित्रकला की रूपक-कथा', 'धर्म की रूपक कथा' जैसे रूपक चित्र बनाये। किन्तु कुछ समय में ही उन्होंने समकालीन डच चित्रकारों के समान गृहांतर्भागों के दृश्यों का चित्रण शुरू किया व उन सबको पीछे छोड़ गये। प्रकाश के यथार्थ प्रभाव व रंगों की सही छटाओं का अंकन करने का उनका कौशल अपवादात्मक था। वे मानो पूर्व निश्चय करके ही चित्रण करना आरम्भ करते कि अपनी तूलिका का पट पर होने वाला एक भी स्पर्श अपने अंतिम लक्ष्य से चूक न जाये। परिणामस्वरूप उनके चित्रित दृश्य स्वच्छ पारदर्शक व नैसर्गिक झिलमिलाहट युक्त प्रकाश से ओत-प्रोत हैं। वातावरणीय प्रभाव का विशेष ख्याल रखने से उनके चित्रों में कमरे की गहराई व विस्तार एवं भिन्न वस्तुओं के बीच की दूरी का आभास बहुत

Scanned with CamScanner